B.Ed. 1st year (21-23)

Sub- Childhood and growing up (Paper-C1)

Unit - 2nd.

* संज्ञानात्मक विकास की अवस्थायें (जीन पियाजे के संदर्भ में):-

जीन-पियाजे ने बालक के संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाओं को बताया है:—

→ (1) संवेदी-पेशीय अवस्था (Sensory-Motor stage) (जन्म - 2 वर्ष)

→ (2) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational stage) (2 - 7 वर्ष तक)

→ (3) स्थूल-संक्रियात्मक अवस्था या ठोस संक्रिया की अवस्था (मूर्त संक्रियात्मक अवस्था) (Concrete operational stage) (7 - 12 वर्ष)

→ (4) औपचारिक-संक्रिया की अवस्था या अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Stage of formal operations) (12 वर्ष से 17 वर्ष तक)

(1) संवेदी पेशीय अवस्था (जन्म - 2 years)
(Sensory - Motor Age or stage) —:

यह अवस्था जन्म से 2 वर्ष की अवस्था है पियाजे का विचार है कि इस अवस्था में बालक अपने आँख, कान, हाथ और अन्य इंद्रियों के माध्यम से अपनी संवेदनाओं के द्वारा विचार या चिंतन व्यक्त करते हैं। शिशु बाह्य जगत के उद्दीपकों का ज्ञान केवल अपनी संवेदनाओं तथा शारीरिक क्रियाओं द्वारा अर्जित करता है वह धीरे-धीरे अनुकरण का व्यवहार करना शुरू कर देता है इस प्रकार आयु बढ़ने के साथ-साथ बालक सहज क्रियाओं को व्यवहार में परिवर्तित करना शुरू कर देता है तथा 5-6 माह तक की आयु में बालक वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने लगता है।

(2) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (pre-operational stage)
(2 वर्ष से 7 वर्ष तक) —: यह अवस्था 2-7 वर्ष तक की अवस्था होती है इसमें बालक नई सूचनाओं और अनुभवों का संग्रह करता है; वह अनुकरण, खेल भाषा, चित्र-निर्माण आदि की सहायता से ज्ञान अर्जन करता है। इसमें बालक पहली अवस्था की अपेक्षा अधिक समस्याओं का समाधान करने योग्य हो जाता है, इस अवस्था में मुख्यतः भाषा और वस्तुओं तथा घटनाओं के अर्थ का विकास होता है, इस अवस्था में बालक संकेत तथा चिन्हों से अपने चिंतन क्षमता को विकसित करता है अर्थात बालक खेल और अनुकरण के माध्यम से सीखता है।

इस तरह धीरे-धीरे बालक की आयु बढ़ने से चिंतन एवं तर्क शक्ति पहले से अधिक परिपक्व हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वह साधारणतः मानसिक क्रियाओं के द्वारा समस्या समाधान की योग्यता प्राप्त कर लेता है।

(3) स्थूल - संक्रियात्मक अवस्था या ठोस संक्रियात्मक अवस्था या मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete operational stage) (7 - 12 वर्ष) :- यह अवस्था 7 से 12 वर्ष तक की है। इस अवस्था में बच्चे मूर्त तथा निरीक्षण योग्य वस्तुओं के विषय में तार्किक चिंतन करने के योग्य हो जाते हैं। इस अवस्था में बालक के अंदर बात-चीत करने, तरह-तरह के प्रश्नों का उत्तर जानने की प्रवीणता आ जाती है अर्थात वो समझने लगते हैं कि इस पृथ्वी पर पाई जाने वाली वस्तुओं का मूलभूत गुण नहीं बदलते चाहे उसका रूप परिवर्तित हो जाये।

अतः पियाजे के अनुसार बालकों में अनेक मानसिक गुणों का विकास होने लगता है जैसे - अच्छा - बुरा, उपयोगी - अनुपयोगी, खट्टा - मिठा, लाल - पिला, छोटा - बड़ा इत्यादि अर्थात बालकों में संख्या बोध, पारिपक्वता, वर्गीकरण तथा संरक्षण इत्यादि गुणों का विकास होने लगता है। इस प्रकार बालक अपने चारो ओर के वातावरण के साथ अनुकूलन या समायोजन करने के सारे नियम सिख लेता है।

(4) औपचारिक - संक्रियात्मक अवस्था या अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Formal operational stage) :-

संज्ञानात्मक विकास की अवस्था 12 वर्ष से 17 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था की मुख्य विशेषता है कि बालक वास्तविक जगत से काल्पनिक जगत की ओर गतिशील होने लगता है।

इस प्रकार बालक इस अवस्था में अपने नवीन सपनों को साकार करने तथा उनमें आने वाली समस्याओं पर विचार करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है अतः इस अवस्था में बालक अमूर्त चिंतन द्वारा अमूर्त नियमों का निर्माण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। (चिंतन, कल्पना, विवेचनात्मक संख्या इत्यादि)
अर्थात प्रश्नों या वाक्यों की सत्यता को (तार्किक दृष्टिकोण) समझने लगता है जैसे सभी मनुष्य या जीव जो जन्म लेते है वे मरणशील होते है।

* पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की शैक्षिक उपयोगिता और महत्व —
(Educational Utilities and Importance of Piaget's Cognitive Development)

(1) इसमें बालक की भूमिका को काफी महत्वपूर्ण माना गया है साथ ही शिक्षकों को पाठ्यक्रम तैयार करते समय विद्यार्थी की आवश्यकता, प्रेरणा एवं अभिरुचि इत्यादि पर विशेष रूप से ध्यान देकर पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार करना चाहिए।

(2) इससे शिक्षक को अपने अध्यापन कार्य में विशेष मदद मिलती है वे अपने अध्यापन का कार्यक्रम इस ढंग से तैयार कर पाते है कि छात्रों को उनकी मानसिक क्रियाओं के अनुकूल शिक्षण किया जा सके।

(3) इसमें ठोस संक्रियात्मक अवस्था में बालकों का संज्ञानात्मक विकास उस स्तर का हो जाता है

कि वे संरक्षण, संबंध तथा वर्गीकरण से संबंधित समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

अतः शिक्षक बालकों के इन जटिल मानसिक, संक्रियाओं को अधिक बढ़ा देते हैं तो इससे उनके बौद्धिक विकास का स्तर तेजी से बढ़ता है। जिससे बालकों के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है।

(4) इसमें शिक्षक खेल के माध्यम से बालकों में संवेगात्मक क्षमता को विकसित कर उसके शारीरिक विकास को बढ़ाता है।

(5) इसमें शिक्षक किशोर बालकों के अंदर संक्रियात्मक चिंतन के स्तर को बढ़ाता है तथा उसे अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करता है जिसके लिए उसे उच्च स्तर की शिक्षा ~~प्रदान किया जाता~~ देने की व्यवस्था की जाती है।

(6) इससे शिक्षकों को शिक्षार्थी में आत्म-विश्वास जाग्रत करने में सरलता प्राप्त होती है तथा शिक्षार्थी को अध्यापन कार्य के लिए स्वयं भी अच्छा निर्देश प्राप्त होता है।

निष्कर्ष :- निष्कर्षतः पियाजे ने अपने सिद्धांत के माध्यम से बालक के विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों एवं उनके संज्ञान को विकसित होते हुए वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है।